मुहर्रम और आशूरा के फ़ज़ाइल व मसाइल

मौलाना फ़ज़्लुर्रहमान आज़मी

मुहर्रम और आशूरा के फ़ज़ाइल व मसाइल

मुहर्रम और आशूरा के फ़ज़ाइल व मसाइल

मौलाना फ़ज़लुर्रहमान आज़मी

www.idaraimpex.com

मुहर्रम और आशूरा के फ़ज़ाइल व मसाइल

मैलाना फ़ज़्लुर्रहमान आज़्मी

Muharram Aur A'ashura ke Fazail-o-Masa'il

प्रकाशन : 2012

ISBN: 81-7101-487-9

TP-1631-12

Published by Mohammad Yunus for
IDARA IMPEX
D-80, Abul Fazal Enclave-I, Jamia Nagar
New Delhi-110 025 (India)
Tel.: 2695 6832 Fax: +91-11-6617 3545
Email: **sales@idaraimpex.com**
Visit us at: **www.idarastore.com**

Designed & Printed in India

Typesetted at: DTP Division
IDARA ISHA'AT-E-DINIYAT
P.O. Box 9795, Jamia Nagar, New Delhi-110025 (India)

विषय-सूची

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुहर्रम और आ़शूरा के फ़ज़ाइल व मसाइल

नह्मदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम० अम्मा बाद०

(कुछ जगहों और दिनों की फ़ज़ीलतें)

अल्लाह तआ़ला ने अपने कामिल अख़्तियार और मुक्म्मल कुदरत की वजह से अपनी मख़्लूक़ात में मरातिब का फ़र्क़ रखा है, खुद फ़रमाया ....

वरब्बु-क यख़्लुकु मा यशाउ व यख़्तारु मा का-न लहुमुलख़िय-रतु सुब्हानल्लाहि व तआ़ला अ़म्मा युश्रिकून —कसस : 61

'आप का रब पैदा करता है, जो चाहता है और चुन लेता है। लोगों को अख़्तियार नहीं है। अल्लाह तआ़ला की ज़ात पाक और बरतर है, उससे जिसके साथ ये लोग शरीक करते हैं।'

तहक़ीक़ करने वाले उलेमा का सही ख़्याल है कि अल्लाह तआ़ला ने ज़मान व मकान में अपने आप भी फ़ज़ीलत रखी है। अ़ल्लामा इब्नुल क़य्यिम ने ज़ादुलमआ़द के शुरू में इसको बयान किया है और अ़ल्लामा शब्बीर अहमद उस्मानी रहमतुल्लाहि अलैहि ने तक्रीरे बुख़ारी में इसको थोड़े में बयान किया है, फ़रमाते हैं, क्या गुलाब और पेशाब अपने आप में बराबर हैं? सिर्फ़ ख़ुश्बू और बदबू का फ़र्क़ है? हरगिज़ नहीं। पस जिस तरह पेशाब और गुलाब में फ़र्क़ है, उसी तरह बल्कि उससे भी बढ़ कर हज़रत मूसा عليه السلام और फ़िरऔन और हुज़ूर ﷺ और अबू जहल में फ़र्क़ है। यही तहक़ीक़ क़िब्ला नुमा में मौलाना मुहम्मद क़ासिम नानौतवी रहमतुल्लाहि अलैहि ने भी लिखी है और यह बहुत बेहतर है और यही हक़ है और जिसने इसके ख़िलाफ़ कहा, वह यक़ीनन दुरुस्त नहीं है। क्या लैलतुल क़द्र और तमाम रातें बराबर हैं? हरगिज़ नहीं, तो क्या लैलतुल क़द्र में फ़ज़ीलत सिर्फ़ इबादत से है? नहीं, बल्कि इबादत

उसमें इसलिए हुई कि उसमें खुद फ़ज़ीलत थी। इसी तरह रमज़ान की फ़ज़ीलत इस वजह से नहीं कि इसमें क़ुरआन उतरा, बल्कि क़ुरआन इसमें इसलिए उतरा कि वह अपने आपमें अफ़ज़ल था, हां क़ुरआन नाज़िल होने से शरफ़ में इज़ाफ़ा हो गया। इब्ने क़य्यिम ने कुछ आयतों से दलील भी ली है। उन आयतों में से एक आयत 'अल्लाहु अअ़लमु हैसु यजअ़लु रिसालतहू' (अनआ़म 24) भी है

— तक़रीर बुख़ारी अल्लामा शब्बीर अहमद उस्मानी रहमतुल्लाहि अलैहि पृ० 84

इंसानों में अल्लाह तआला ने नबियों अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम को फ़ज़ीलत बख़्शी। फिर नबियों में भी मरातिब का फ़र्क़ रखा, कुछ को कुछ पर फ़ज़ीलत दी। 'तिलकर्रुसुलु फ़ज़्ज़लना बअ़ज़हुम अ़ला बअ़ज़' (बक़रा 253) दिनों में रमज़ान का महीना और अ़शरा ज़ुल हिज्जा की फ़ज़ीलत भी मुसल्लम है। रातों में शबे क़द्र की फ़ज़ीलत भी सबको तस्लीम है। शबे बरात की फ़ज़ीलत भी अक्सर उलेमा मानते हैं, जगहों में मक्का मुकर्रमा और मदीना मुनव्वरा की फ़ज़ीलत भी सबको मालूम है। यही हाल कुछ और वक़्तों और जगहों का है।

मुहर्रम का महीना और आ़शूरा का दिन

इसी तरह माह मुहर्रम और आ़शूरा की भी कुछ फ़ज़ीलतें हदीसों में आई हैं, उन्हीं का बयान करना इस रिसाले का मौज़ू है। अशहरु हुरुम की तो फ़ज़ीलत क़ुरआन में है, उनमें मुहर्रम भी दाखिल है। इसी तरह मुहर्रम के महीने का हराम (माननीय) महीना होना तो क़ुरआन ही से मालूम हो गया, बाक़ी फ़ज़ीलतें हदीसों में हैं।

एक तंबीह

लेकिन फ़ज़ीलतों के बारे में बहुत-सी बातें उम्मत में बे-बुनियाद मशहूर हो गई हैं। मुहर्रम और आ़शूरा के बारे में भी बहुत सी बातें ऐसी मशहूर हो गई हैं, जिनका सबूत हदीस के माहिरों के यहां नहीं है। इसके बारे में बहुत एहतियात की ज़रूरत है। इस रिसाले का एक मक़सद यह भी है कि मुहर्रम व आ़शूरा के बारे में बे-बुनियाद बातों की निशानदेही की जाए।

हमारे पास शरीअत की बुनियाद के तौर पर दो चीज़ें हैं—

1. अल्लाह की किताब और 2. अल्लाह के रसूल ﷺ की सुन्नत।

आमाल और दिनों के फ़ज़ाइल भी अहकाम की तरह इन्हीं दो अमलों से साबित किए जाएंगे, मन गढ़त बातों का कोई एतबार नहीं। हां, बेशक सलफ़े सालिहीन यानी सहाबा व ताबिईन के क़ौल भी, जो साबित हों, हुज्जत होंगे। इसलिए कि जिन बातों में राय और क़ियास को दख़ल न हो (ख़ास तौर से फ़ज़ाइल के बारे में) उनमें इन लोगों का क़ौल हदीस के दर्जे में है।

रहा इज्माअ़ और वह क़ियास जो किताब व सुन्नत से लिया गया हो, तो बेशक ये दोनों भी हुज्जत हैं, लेकिन फ़ज़ाइल की जो बातें मशहूर हैं, उनका इन दोनों से ताल्लुक़ नहीं, इसलिए किसी अमल या क़ौल या किसी ज़मान व मकान की फ़ज़ीलत के लिए रिवायतों की ज़रूरत है और उनके मोतबर या ग़ैर-मोतबर होने के लिए हदीस के माहिर लोग ही मेयार हैं, इसलिए जो बात भी पेश की जाए, उसका माख़ज़ (जहां से लिया गया हो) और हवाला भी पेश करना चाहिए, ताकि मालूम हो सके कि यह बात कहां से आई और एतबार के क़ाबिल है या नहीं, हदीस के माहिरों ने इस मौज़ू पर बहुत-सी किताबें लिखी हैं कि जो हदीसें मुसलमानों की ज़बानों पर मशहूर हैं, वे मोतबर हैं या नहीं, जैसे 'मक़ासिदे हसना' (लेख) सख़ावी 'कश्फ़ुल ख़िफ़ा (लेख) अजलूनी, अत-तज़्किरा, (लेख) ज़रक्शी वग़ैरह।

मोहतरम महीने

साल में बारह महीने हैं, इन में चार महीने मोहतरम हैं— 1. मुहर्रम, 2. रजब, 3. ज़ुल क़ादा, 4. ज़ुल हिज्जा। उनका ख़ास एहतिमाम करना चाहिए। भले कामों में सवाब इनमें ज़्यादा हो जाता है और गुनाहों से बचने का भी ख़ास एहतिमाम करना चाहिए कि उनमें गुनाह का वबाल भी ज़्यादा होता है। (इब्ने अ़ब्बास रज़ि०) जैसे मक्का मुकर्रमा में नेक आमाल का सवाब ज़्यादा होता है और गुनाह की सज़ा भी ज़्यादा होती है। —तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 2, पृ० 554

क़तादा रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं, इन मोहतरम महीनों में ज़ुल्म का गुनाह दूसरे महीनों में ज़ुल्म से ज़्यादा होता है। अगरचे ज़ुल्म हर हाल में बड़ा गुनाह है, लेकिन अल्लाह तआ़ला अपने जिस हुक्म को चाहते हैं, बड़ा बना

देते हैं, साथ ही फ़रमाया, अल्लाह तआला ने अपनी मख़्लूक़ में से कुछ को चुन लिया। फ़रिश्तों में से कुछ को पैग़ाम्बर बनाया। इंसानों में से कुछ को रिसालत से नवाज़ा, और कलामों में से अपने कलाम को मुन्तख़ब फ़रमाया, ज़मीन में से मस्जिदों को छांट लिया, महीनों में से रमज़ान और हराम महीनों (इज़्ज़तदार महीनों) को फ़ज़ीलत दी, दिनों में जुमा को ख़ुसूसियत दी, रातों में शबे क़द्र को इम्तियाज़ बख़्शा, इसलिए अल्लाह तआला ने जिन मामलों को फ़ज़ीलत दी उनको बड़ा समझो। अक़्लमंदो के नज़दीक वही मामले बड़े होते हैं जिनको अल्लाह बड़ा बताते हैं। —तफ़सीर इब्ने कसीर, भाग 2, पृ०554

इसलिए मुहर्रम के महीने में ज़ुल क़ादा, ज़ुल हिज्जा और रजब की तरह भले अमलों का ख़ास एहतिमाम करना चाहिए और गुनाहों से बचने का भी ख़ुसूसी एहतिमाम करना चाहिए।

इमाम जस्सास राज़ी ने अह्कमुल क़ुरआन में फ़रमाया कि इसमें इशारा है इस बात की तरफ़ कि इन मुबारक महीनों में यह ख़ूबी है कि इनमें जो आदमी इबादत करता है, उसको बाक़ी महीनों में भी इबादत की तौफ़ीक़ मिल जाती है और जो आदमी कोशिश करके इन महीनों में अपने आपको गुनाहों और बुरे कामों से बचा ले, बाक़ी साल के महीनों में उसके लिए इन बुराइयों से बचना आसान हो जाता है। इसलिए इन महीनों से फ़ायदा न उठाना एक भारी नुक़्सान है। —मआरिफ़ुल क़ुरआन, भाग 4, पृ० 373

क़ुरआन करीम में उन चार महीनों की ताईन (निर्धारण) नहीं आई। यह ताईन और उनके नाम सही हदीसों में आए हैं।

हज़रत अबू बक्र ﷺ से रिवायत है कि आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया, बेशक ज़माना घूम कर इस हालत पर आ गया, जिस पर आसमान व ज़मीन को पैदा किए जाने का वक़्त था। साल में बारह महीने हैं, उनमें चार मोहतरम हैं— तीन लगातार, ज़ुल क़ादा, ज़ुल हिज्जा, और मुहर्रम और एक मुज़र (क़बीले) का रजब जो जुमादस्सानी और शाबान के दर्मियान है।

—बुख़ारी शरीफ़, भाग 2, पृ० 632

इस हदीस शरीफ़ में क़ुरआन करीम की आयतों की तरफ़ इशारा है—

انما النَّسِیٓءُ زِيَادَةٌ فِی الْكُفْرِ يُضَلُّ بِهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا (توبہ ٣٧)

'नसी यानी महीनों को आगे-पीछे करना कुफ़्र में ज़्यादती है, इससे

कुफ़्फ़ार गुमराही में ही पड़ते हैं। —तौबा 37

मक्का के कुफ़्फ़ार अपनी नफ़्सानी ग़रज़ों को पूरा करने के लिए महीने आगे-पीछे करते थे। मुहर्रम में लड़ने को जी चाहता तो यह कह देते कि इस साल पहले सफ़र का महीना आएगा, इसके बाद मुहर्रम का, इस तरह मुहर्रम को दूसरे महीने में तब्दील कर देते थे। हज़रत इब्राहीम عليه السلام के दौर से यह बात चली आ रही थी कि चार महीने मुहर्रम (एहतराम के) हैं, इनमें लड़ाई मना है, तो मक्का के कुफ़्फ़ार चार के अदद का एहतराम करना चाहते थे लेकिन लड़ने की ख़्वाहिश पूरी करने के लिए महीनों को आगे-पीछे करते थे, इसकी वजह से अ़रबों की गिनती में महीनों का सही पता न था। आंहज़रत ﷺ ने बयान फ़रमा दिया कि इस साल महीनों की तर्तीब बिल्कुल फ़ितरत के मुताबिक़ हो गई है। इससे पहले साल सन् 09 हिजरी में, जबकि हज़रत अबू बक्र رضي الله عنه की इमारत (नेतृत्त्व) में हज हुआ था, अगरचे महीना ज़ुल हिज्जा ही का था, लेकिन जाहिलियत की गिनती में वह ज़ूल कादा था, शायद इसी लिए आंहज़रत ﷺ ने अपने हज को टाल दिया और उस साल 10 हिजरी में हज के मौक़े पर मिना के दसवीं ज़ुल हिज्जा के ख़ुत्बे में यह फ़रमाया—

ان الزمان قد استدار كهيئته يوم خلق السموٰات والارض (بخاری)

'ज़माना घूम कर उस दिन की शक्ल पर आ गया है जब कि आसमानों और ज़मीन की पैदाइश हुई थी' (बुख़ारी) और आगे जो फ़रमाया कि साल के बारह महीने हैं उसमें क़ुरआन की आयत—

'इन-न इद्दतश-शुहूरि अ़िन्दल्लाहिस्ना अश-र शहरन फ़ी किताबिल्लाहि यौ-म ख़-ल-क़स्समावाति वल अर-ज़ मिन्हा अरब-अ़तुन हुरुम' (तौबा 36) की तरफ़ इशारा है कि महीनों की गिनती अल्लाह तआ़ला के यहां बारह है। लौहे महफ़ूज़ में लिखा हुआ है, जब से आसमान व ज़मीन पैदा हुए उनमें चार महीने मोहतरम हैं। ये वही महीने हैं जिनको हदीस ने मुतऐयन किया है।

पहले इन महीनों में लड़ाई मना थी, फिर बाद में यह हुक्म मंसूख़ हो गया कि नहीं, इसमें उलेमा का इख़्तिलाफ़ है, कुछ मंसूख़ मानते हैं और कहते हैं कि अब इन महीनों में क़िताल बिल्कुल जायज़ है। कुछ कहते हैं कि वह हुक्म अब भी बाक़ी है, लड़ाई ख़ुद शुरू नहीं करेंगे, हां, दुश्मन के हमले का जवाब दे सकते हैं या अगर पहले से लड़ाई चल रही हो तो जारी रखते हुए इन महीनों में भी क़िताल कर सकते हैं। जिन आयतों से रोक समझ में आती है, वह शुरू

की बात है, तफ़्सील के लिए देखिए, ज़िक्र की गई आयत की तफ़्सीर।

मुहर्रम महीने का रोज़ा

मुहर्रम महीने की एक फ़ज़ीलत यह भी है कि इस महीने का रोज़ा रमज़ान के बाद सबसे अफ़ज़ल है और इस माह को आंहज़रत ﷺ ने अल्लाह तआला का महीना क़रार दिया है। यों तो सारे ही दिन और महीने अल्लाह तआला के हैं, लेकिन अल्लाह तआला की तरफ़ निस्बत करने से उसका शरफ़ और फ़ज़ीलत ज़ाहिर होती है।

हज़रत अबू हुरैरह رضي الله عنه से रिवायत है कि हज़रत ﷺ ने फ़रमाया, रमज़ान के महीने के बाद सबसे अफ़ज़ल रोज़ा अल्लाह तआला के मुहर्रम के महीने का रोज़ा है। —तिर्मिज़ी, भाग 1, पृ०157

हज़रत अली رضي الله عنه से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत ﷺ के पास बैठा हुआ था। एक साहब ने आकर पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ! रमज़ान के महीने के बाद किस महीने के रोज़े रखने का आप मुझे हुक्म देते हैं तो आप ﷺ ने फ़रमाया कि अगर रमज़ान के महीने के बाद तुमको रोज़ा रखना हो तो मुहर्रम का रोज़ा रखो, इसलिए कि यह अल्लाह का महीना है। इसमें एक दिन है, जिसमें अल्लाह ने एक क़ौम की तौबा क़ुबूल की और दूसरे लोगों की तौबा भी क़ुबूल फ़रमाऐंगे। (तिर्मिज़ी ने इसको रिवायत किया और इसको हसन बताया। —भाग 1, पृ० 157

लेकिन इस रिवायत में ज़ोफ़ है। जिस क़ौम की तौबा क़ुबूल हुई, वह क़ौम बनी इसराईल है। आशूरा के दिन अल्लाह तआला ने मूसा عليه السلام को बनी इसराईल के साथ फ़िरऔन और उसके लश्कर से निजात दी, इसकी वज़ाहत आने वाली है। उस दिन की वजह से इस महीने में फ़ज़ीलत आ गई। कुछ उलेमा के नज़दीक मुहर्रम से मुराद उसका ख़ास दिन यानी दसवीं आशूरा है। तो उनके नज़दीक इन हदीसों से सिर्फ़ आशूरा के दिन के रोज़े की फ़ज़ीलत साबित होगी, न कि पूरे महीने की। —अल-उर्फ़ुशशज़ी

आशूरा (दसवीं मुहर्रम) का रोज़ा

दसवीं मुहर्रम का दिन इस्लामी तारीख़ में एक बड़ा मोहतरम दिन है।

उस दिन में आंहज़रत ﷺ ने रोज़ा रखा था और मुसलमानों को रोज़ा रखने का हुक्म भी दिया गया है। पहले तो यह रोज़ा वाजिब था, फिर जब रमज़ानुल मुबारक के रोज़े फ़र्ज़ हुए तो मुसलमानों को अख़्तियार दे दिया गया कि चाहें यह रोज़ा रखें, चाहे न रखें, अलबत्ता इसकी फ़ज़ीलत बयान कर दी गई कि जो रोज़ा रखेगा उसके पिछले एक साल के गुनाह माफ़ कर दिए जाएंगे। पहले यह रोज़ा सिर्फ़ एक दिन रखा जाता था, लेकिन आख़िर में हज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि अगर मैं ज़िंदा रहा तो इनशाअल्लाह नवीं मुहर्रम को भी रोज़ा रखूंगा, फिर आपका विसाल हो गया (इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन०) इसलिए यह रोज़ा दो दिन रखना चाहिए– नौ और दस को या दस और ग्यारह को। कुछ किताबों में यह रिवायत इस तरह भी आई है कि एक दिन पहले और एक दिन बाद, इसलिए अगर तीन रोज़े रखें (9, 10, 11) तो भी बेहतर है अलबत्ता सिर्फ़ दस को रोज़ा रखना बेहतर नहीं, बल्कि मकरूह तंज़ीही है– यह रोज़ा इस तरह शुरू हुआ कि हज़रत मूसा عليه السلام और बनी इसराईल को फ़िरऔन और उसके लश्कर से इसी दिन निजात मिली, इसलिए मूसा عليه السلام ने शुक्रिए में यह रोज़ा रखा और यहूदियों में यह रोज़ा चलता रहा। यहूदियों से क़ुरैश ने सीखा, क़ुरैश मक्का मुकर्रमा में यह रोज़ा रखते थे। आंहुज़ूर ﷺ ने भी यह रोज़ा रखा था। मदीना तशरीफ़ लाए तो देखा यहूदी यह रोज़ा रखते हैं। पूछा गया कि क्यों यह रोज़ा रखते हो? यहूदियों ने बताया कि इसलिए कि अल्लाह तआला ने हमको उसी दिन फ़िरऔन से निजात दी। आप ﷺ ने फ़रमाया कि हम तुमसे ज़्यादा मूसा عليه السلام के हक़दार हैं, इसी लिए आपने यह रोज़ा रखा और मुसलमानों को भी रखने का हुक्म दिया और शुरू-शुरू में आप ﷺ अहलेकिताब के साथ मुवाफ़क़त को पसन्द करते थे, फिर बाद में मुख़ालफ़त का हुक्म हुआ तो फ़रमाया कि अगर ज़िंदा रहा तो नवीं को भी रोज़ा रखूंगा, ताकि मुख़ालफ़त हो जाए, इसलिए सिर्फ़ दस को रोज़ा रखना फ़ुक़हा-ए-किराम ने मकरूहे तंज़ीही क़रार दिया। (दुर्रे मुख़्तार, भाग 2, पृ० 91, मय रद्दुल मुख़्तार) अब इस मज़्मून की रिवायतें देखिए–

आशूरा के रोज़े से मुताल्लिक़ रिवायतें

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ होने

से पहले लोग आ़शूरा का रोज़ा रखते थे और आ़शूरा के दिन बैतुल्लाह शरीफ़ को ग़िलाफ़ पहनाया जाता था। जब रमज़ान फ़र्ज़ हुआ तो आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि जो चाहे रोज़ा रखे, जो चाहे न रखे। —बुख़ारी शरीफ़, पृ०217

एक रिवायत में इस तरह है कि फ़रमाती हैं कि क़ुरैश जाहिलियत में आशूरा के दिन रोज़ा रखते थे और आंहुज़ूर ﷺ भी उस वक़्त यह रोज़ा रखते थे, जब मदीना तशरीफ़ लाए तो यहां भी रोज़ा रखा और इस रोज़े का हुक्म दिया। जब रमज़ान फ़र्ज़ हुआ तो आ़शूरा (के रोज़े का हुक्म) छोड़ दिया गया, जो चाहे रोज़ा रखे, जो चाहे न रखे। —बुख़ारी, पृ० 254, 268

हज़रत रुबैअ़ बिन्त मुअ़व्वज़ रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि आंहज़रत ﷺ ने आ़शूरा की सुबह अंसार के गांव में एलान कर दिया कि जिसने सुबह को खा-पी लिया हो, वह बाक़ी दिन पूरा करे (यानी रुका रहे) और जिसने अभी तक खाया-पिया नहीं है, वह रोज़ा रखे। फ़रमाती हैं कि हम भी यह रोज़ा रखती थीं और अपने बच्चों को रोज़ा रखवाती थीं और उनके लिए ऊन का खिलौना बनाती थीं। जब कोई बच्चा खाने के लिए रोता, तो यह खिलौना उसको दे देतीं, यहां तक कि इफ़तार का वक़्त हो जाता। (बुख़ारी, भाग 1, पृ० 263) बच्चों को मस्जिद भी ले जाती थीं —मुस्लिम भाग 1, पृ० 360

हज़रत सलमा बिन अकवअ़ ؓ फ़रमाते हैं कि हज़रत ﷺ ने आ़शूरा के दिन एक आदमी को भेजा, जो लोगों में यह एलान कर रहा था कि जिसने खा लिया, वह पूरा करे या फ़रमाया (यानी बाक़ी दिन खाने-पीने से रुका रहे और जिसने नहीं खाया, वह न खाए। (यानी रोज़ा रखे)

—बुख़ारी, भाग 1, पृ० 257, 268

इन रिवायतों से मालूम होता है कि यह रोज़ा पहले वाजिब और ज़रूरी था।

हज़रत इब्ने अब्बास ؓ फ़रमाते हैं कि हज़रत ﷺ मदीना तशरीफ़ लाए तो यहूदियों को देखा कि आ़शूरा के दिन रोज़ा रखते हैं। आपने पूछा, यह क्या है? यहूदियों ने कहा, यह अच्छा दिन है, इस दिन अल्लाह तआ़ला ने बनी इसराईल को उनके दुश्मन से निजात दी, मूसा ؑ और बनी इसराईल को ग़लबा और कामयाबी अता फ़रमाई। हम उस दिन की ताज़ीम के लिए रोज़ा रखते हैं। आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया, हम तुमसे ज़्यादा मूसा ؑ के क़रीब हैं, फिर आपने भी रोज़ा रखा। (यानी रखते रहे) और लोगों को भी रोज़ा रखने का हुक्म दिया। —बुख़ारी, भाग 1, पृ० 268, 562

हज़रत अबू मूसा अशअ़री रह० फ़रमाते हैं कि आंहज़रत ﷺ मदीना मुनव्वरा में दाख़िल हुए तो देखा कि कुछ यहूदी आ़शूरा की ताज़ीम कर रहे हैं और उस दिन रोज़ा रखते हैं, उसको ईद बना रहे हैं। आपने फ़रमाया, हम इस रोज़ा के ज़्यादा हक़दार हैं। फिर आपने मुसलमानों को रोज़ा रखने का हुक्म दिया। —बुख़ारी, जिल्द 1, पृ० 268, 562

हज़रत इब्ने अब्बास رضي الله عنه फरमाते हैं कि मैंने आंहज़रत ﷺ को नहीं देखा कि किसी दिन के रोज़े का, जिसकी फ़ज़ीलत दूसरे पर बयान फ़रमाई हो, एहतिमाम और क़स्द करते हों, सिवा आ़शूरा के रोज़ा और रमज़ान के महीने के। —बुख़ारी, भाग 1, पृ० 268

यानी इन दोनों की फ़ज़ीलत भी बयान फ़रमाई और रखने का भी एहतिमाम किया।

हज़रत अमीर मुआ़विया رضي الله عنه हज के लिए तशरीफ़ लाए तो आंहज़रत ﷺ के मिंबर पर आ़शूरा के दिन (खड़े होकर) फ़रमाया, ऐ मदीना वालो! कहां हैं तुम्हारे उलेमा? मैंने आंहज़रत ﷺ को सुना, फ़रमा रहे थे कि यह आशूरा का दिन है और अल्लाह तआ़ला ने तुम पर इसका रोज़ा फ़र्ज़ नहीं किया है। मैं रोज़े से हूं, जो चाहे रोज़ा रखे, जो चाहे न रखे। —बुख़ारी, भाग 1, पृ०262

अशअ़स बिन क़ैस رضي الله عنه आशूरा के दिन हज़रत इब्ने मसऊद رضي الله عنه की ख़िदमत में हाज़िर हुए, वह खाना खा रहे थे, फ़रमाया, अबू मुहम्मद आ जाओ, दोपहर के खाने में शरीक हो जाओ। अशअ़स رضي الله عنه ने फ़रमाया कि क्या आज आशूरा नहीं है? फ़रमाया, जानते हो, आ़शूरा क्या है? पूछा, क्या है? इब्ने मसऊद رضي الله عنه ने फ़रमाया, यह ऐसा दिन है कि रमज़ान का रोज़ा फ़र्ज़ होने से पहले आंहज़रत ﷺ यह रोज़ा रखते थे। जब रमज़ान का हुक्म आ गया तो उसका वाजिब होना तर्क कर दिया गया। (मुस्लिम भाग 1, पृ० 358) यही बात हज़रत जाबिर बिन समुरा رضي الله عنه से भी रिवायत की गई है।

इमाम नववी रह० फ़रमाते हैं कि इस पर इज्माअ़ हो गया है कि अब यह रोज़ा फ़र्ज़ नहीं है, सिर्फ़ मुस्तहब है। —वही

आ़शूरा के रोज़े का सवाब

हज़रत अबू क़तादा رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया, आ़शूरा के रोज़े के बारे में मुझे अल्लाह तआ़ला से उम्मीद है कि पीछे के एक

साल के गुनाह माफ़ फ़रमा देंगे। (तिर्मिज़ी, भाग 1, पृ० 151) इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते है कि सिर्फ़ इसी एक हदीस में यह फ़ज़ीलत हमको मालूम है। इमाम अहमद और इसहाक़ इसी के क़ायल हैं। (वही)

गुनाह से मुराद उसूल के मुताबिक़ सग़ीरा गुनाह हैं, कबीरा के लिए तौबा की ज़रूरत होगी।

आ़शूरा का रोज़ा रखने का तरीक़ा

हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ फ़रमाते हैं कि आंहज़रत ﷺ ने आ़शूरा का रोज़ा रखा और लोगों को इसका हुक्म दिया। लोगों ने बताया कि यहूदी और ईसाई उस दिन की ताज़ीम करते हैं, तो आपने फ़रमाया, अगर अगले साल ज़िंदा रहा तो इनशाअल्लाह नवीं को (भी) रोज़ा रखूंगा, लेकिन अगले साल आपका विसाल हो गया। (इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन०)

—मुस्लिम, भाग 1, पृ० 359

हकम बिन आरज फ़रमाते हैं कि मैं इब्ने अब्बास ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। वह ज़मज़म के कुएं के पास चादर से टेक लगाए हुए थे। मैंने कहा, मुझे बताइए कि आ़शूरा के दिन का रोज़ा मैं किस तरह रखूं? फ़रमाया, जब मुहर्रम का चांद देखो तो गिनती करते रहो, फिर नवीं की रात को रोज़ा रखो। कहते हैं कि मैंने पूछा, क्या आंहज़रत ﷺ इसी तरह यह रोज़ा रखते थे? इब्ने अब्बास ﷺ ने फ़रमाया, हां यह हदीस सहीह है।

—तिर्मिज़ी, भाग 1, पृ० 158

दूसरी हदीस में है कि इब्ने अब्बास ﷺ ने फ़रमाया, आंहज़रत ﷺ ने दसवीं तारीख़ को आशूरा का रोज़ा रखने का हुक्म दिया। एक और रिवायत में इब्ने अब्बास ﷺ का इर्शाद है कि नवीं और दसवीं का रोज़ा रखो और यहूदियों की मुख़ालफ़त करो। —तिर्मिज़ी, पृ०158

दूसरी रिवायत तहावी और बैहक़ी ने सही सनद से नक़ल की है।

—तोहफ़तुल अहवज़ी

इन सब रिवायतों से मालूम हुआ कि आ़शूरा का रोज़ा रखने का पसंदीदा तरीक़ा यह है कि नवीं और दसवीं को रोज़ा रखें और हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ ने जो फ़रमाया कि हां, इसी तरह आंहज़रत ﷺ रोज़ा रखते थे, मतलब इसका यह है कि अगर ज़िंदा रहते तो ऐसा ही करते जैसा कि आपने इरादा ज़ाहिर

फ़रमाया था, इसलिए अगरचे सच में किया नहीं, लेकिन पसन्द फ़रमाने की वजह से यह आपके फ़ेल (कार्य) ही की तरह है। वल्लाहु आलम

हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ से एक रिवायत बहुत सी किताबों में ज़िक्र की गई है जो मुहम्मद बिन अबी लैला के वास्ते से रिवायत की गई है, इसमें आंहुज़ूर ﷺ का इर्शाद है कि आ़शूरा का रोज़ा रखो और उसमें यहूदियों के ख़िलाफ़ करो। एक दिन पहले रोज़ा या एक दिन बाद।

—मुस्नद अहमद, भाग 1, पृ० 241, तहावी बैहक़ी, बज़्ज़ार वग़ैरह

यानी (9, 10) को रोज़ा रखो या (10, 11) को। मुहम्मद बिन अबी लैला कुछ ज़ईफ़ हैं। इब्ने रजब हंबली फ़रमाते हैं कि 'अव तख़ईर' के लिए हो सकता है और शक के लिए भी, यानी रावी को शक है कि 'क़बलहू' (इससे पहले) फ़रमाया या 'बादहू' (इसके बाद)

फिर इब्ने रजब रह० ने ऐसी रिवायतें ज़िक्र कीं, जिनमें 'वाव' (व) का लफ़्ज़ है, यानी एक दिन पहले और एक दिन बाद यानी कुल तीन दिन रोज़ा रखें।

मुस्नद अहमद के नुस्ख़े भी अलग-अलग मालूम होते हैं। हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० ने फ़त्हुलबारी और 'अत-तल ख़ीसुल जीर' में औ (यानी या) से नक़्ल किया और नैलुल अवतार के मतन 'मन्तक़ल अख़बार' में वाव (यानी व) के साथ । ख़ुल्बातुल अहकाम में जमऊल फ़वाइद से 'वाव' (व) के साथ नक़्ल किया है। बैहक़ी के कुछ हिस्सों में 'औ' (या) और कुछ में 'वाव' (व) के साथ।

—लताइफ़ुल मआ़रिफ़ लिब्ने रजब हंबली, पृ० 108

अगर वाव (व) के साथ रिवायत साबित मान ली जाए और इब्ने रजब हंबली रहमतुल्लाहि अलैहि का रुझान उसी तरफ़ मालूम होता है, तो फिर तीन दिन रोज़ा रखना भी साबित होगा। इसी लिए शेख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रह० ने लमआ़त में लिखा है जैसा कि तिर्मिज़ी के हाशिए में ज़िक्र किया गया है मुहर्रम के रोज़े के तीन दर्जे है—

1. सबसे अफ़ज़ल 9-10, 11, तीन दिन,
2. 9 और 10, दो दिन,
3. सिर्फ़ 10 को, एक दिन,

9 और 10 में कई हदीसें आई हैं, 10 और 11 को कोई दर्जा नहीं, सिर्फ़ 9 का रोज़ा भी सुन्नत नहीं।

—हाशिया तिर्मिज़ी, भाग 1, पृ 158

दुर्रे मुख़्तार में लिखा है कि सिर्फ़ दस का रोज़ा मकरूहे तंज़ीही है, यानी पहले या बाद शामिल किए बग़ैर। —दुर्रे मुख़्तार मय रद्दुल मुख़्तार, भाग 2, पृ० 91

तंबीह

इस मसले से मालूम हुआ कि यहूदियों और ईसाइयों के साथ इबादत में मिलती-जुलती शरीअ़त भी पसन्दीदा नहीं, इसी लिए सिर्फ़ 10 का रोज़ा मकरूह कहा गया। इसके बावजूद कि हज़रत ﷺ ने यह रोज़ा रखा था, लेकिन आपका इरादा उसके ख़िलाफ़ करने का था, इसलिए किसी तरह ख़िलाफ़ होना चाहिए, चाहे एक दिन पहले रख कर हो या एक दिन बाद।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि आंहज़रत ﷺ बालों को सीधा लटकाते थे, मांग नहीं निकालते थे। अहले किताब भी ऐसा ही करते थे, मुश्रिक मांग निकालते थे। आंहज़रत ﷺ जिस मामले में अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से ख़ास हुक्म नहीं आता, उसमें अहले किताब की मुवाफ़क़त को पसन्द करते थे, फिर आपने भी मांग निकाली। —बुख़ारी, भाग 1, पृ० 503, 562,

इससे मालूम हुआ कि इस रोज़े के मामले में भी अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से मुख़ालफ़त का हुक्म मिला था, इसलिए सिर्फ़ दस का रोज़ा नहीं रखना चाहिए।

अह्ल व अ़याल पर वुसअ़त के साथ ख़र्च करना

आ़शूरा के दिन अह्ल व अ़याल पर ख़र्च करने में वुसअ़त करना पसंदीदा काम है या नहीं? कुछ उलेमा किराम यह फ़रमाते हैं कि इसकी कोई हक़ीक़त नहीं और जो हदीस इसमें रिवायत की गई है, वह एतबार के क़ाबिल नहीं।

लेकिन यह राय मज़बूत और दर्मियानी दर्जे की नहीं, बल्कि इसकी बुनियाद बहुत सख़्त है। कुछ एतिदाल पसन्द मुहद्दिसों की राय यह है कि इस मज़्मून की हदीस मोतबर है, इसलिए यह अमल पसन्दीदा और मन्दूब है। अल्लामा सख़ावी रह० ने मक़ासिदुल हसना में इस हदीस की हिमायत की है।

हज़रत इब्ने मसऊद رضي الله عنه से रिवायत है कि आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया—

मन वस्स-अ़ अ़ला अ़यालिही फ़ीयौमि आ़शूरा व-स-अल्लाहि अ़लैहिस्सन-ति कुल लिहा०

(जो कोई आ़शूरा के दिन आपने अह्ल व अ़याल पर वुसअ़त अख़्तियार करेगा, अल्लाह तआ़ला उस पर पूरे साल वुसअ़त और फ़राख़ी फ़रमाएंगे।)

इसको तबरानी, बैहक़ी और अबुश्शैख़ ने इब्ने मसऊद ﷺ से रिवायत किया। तबरानी और बैहक़ी ने अबूसईद ख़ुदरी ﷺ से, बैहक़ी ने हज़रत जाबिर और अबू हुरैरह ﷺ से और फ़रमाया इन सब की सनदें ज़ईफ़ (कमज़ोर) हैं, लेकिन कुछ को कुछ से मिलाया जाए तो ताक़त पैदा हो जाती है।

—मक़ासिद, लेख : सख़ावी, पृ० 674

सख़ावी की पूरी इबारत यह है।

[١١٩٣]حديث: (مَنْ وَسَّعَ على عيالهِ فِي يومَ عاشوراء وَسَّعَ اللّٰه عليه السنة كلها)۔

الطبراني، والبيقهى في الشعب وفضائل الأوقات، وأبو الشيخ؛ عن ابن مسعود؛ والأولان فقط عن أبي سعيد؛ والثاني فقط في الشعب عن جابر وأبى هريرة، وقال: إن أسانيده كلها ضعيفة، ولكن إذا ضم بعضها إلى بعض أفادقوة۔

بل قال العراقي في أماليه: لحديث أبى هريرة طرق صحح بعضها ابن ناصر الحافظ، وأورده ابن الجوزي في الموضوعات من طريق سليمان بن أبي عبدالله، وقال: سليمان مجهول، وسليمان ذكره ابن حبان في الثقات؛

فالحديث حسن على رأيه، قال وله طريق عن جابر على شرط مسلم، اخرجها ابن عبدالبر في الاستذكار من رواية أبي الزبير عنه، وهى أصح طرقه، ورواه هو والدار قطني في الأفراد بسند جيد عن عمر موقوفاً عليه، والبيهقي في الشعب من جهة محمد بن المنتشر، قال: كان يقال فذكره، قال وقد جمعت طرقه فى جزء۔

قلت واستدرك عليه شيخنا رحمه الله كثيراً لم يذكره وتعقب اعتماد ابن الجوزى فى الموضوعات قول العقيلى فى هيصم بن شداخ راوى حديث ابن مسعود ان مجهول بقوله بل ذكره ابن حبان فى الثقات والضعفاء۔ (مقاصد حسنه صفحه ٦٧٤)

शाह अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रह० ने 'सब-त बिस्सुन्ना' से सख़ावी का यह कलाम भी ज़िक्र किया है और इससे पहले हाफ़िज़ ज़ैनुद्दीन इराक़ी रहमतुल्लाहि अलैहि का यह कलाम ज़िक्र किया है कि इस हदीस में कुछ नर्मी यानी ज़ोफ़ है, लेकिन इब्ने हिब्बान की राय हसन है। इसका एक दूसरा तरीक़ भी है जिसको हाफ़िज़ अबुल फ़ज़ल मुहम्मद बिन नासिर ने सहीह करार दिया है, इसमें मुन्कर ज़्यादती भी है और बैहक़ी के कलाम का ज़ाहिर यह है कि यह तवस्सोअ़ की हदीस इब्ने हिब्बान के अलावा की राय पर भी हसन है,

इसलिए उन्होंने सहाबा की एक जमाअ़त से यह हदीस मरफ़ूअ़न ज़िक्र की है और फ़रमाया कि ये तमाम सनदें अगरचे ज़ईफ़ हैं, लेकिन कुछ कुछ से मिल कर ताक़त हासिल कर लेती हैं और शेख़ इब्ने तैमिया ने जो इंकार फ़रमाया और फ़रमाया कि तवस्सोअ़ के बारे में कोई चीज़ आंहज़रत ﷺ से रिवायत नहीं की गई है, यह उनका वहम है और इमाम अहमद ने जो फ़रमाया कि यह हदीस नहीं है, इसका मतलब यह भी हो सकता है कि अपने आप में हसन नहीं है, और इससे दूसरे के लिए हसन होने से इंकार नहीं होता और ग़ैर के लिए हसन हदीस भी हुज्जत होती है। (इन्तिहा कलामुल इराक़ी)

—मा सब-त बिस्सन्ना, पृ० 17

अल्लामा शामी ने भी रद्दुल मुख़्तार में लिखा है कि तवस्सोअ़ की हदीस साबित सही है, जैसा कि हाफ़िज़ सुयूती ने अद्दुर्र में फ़रमाया, अलबत्ता आ़शूरा के दिन सुरमा लगाने की हदीस गढ़ी हुई है, जैसा कि सख़ावी ने मक़ासिदे हसना में यक़ीन के साथ लिखा है। मुल्ला अली क़ारी ने भी किताबुल मौज़ूआ़त में इनका इत्तिबा किया। सुयूती ने दुररि मुन्तशरा में हाकिम से नक़ल किया है कि यह मुन्कर है। हाकिम ने यह भी फ़रमाया, जैसा कि जराही ने कश्फ़ुल ख़फ़ा में नक़ल किया कि आंहज़रत ﷺ से कोई असर वारिद नहीं, आ़शूरा के दिन सुरमा लगाने के बारे में, यह बिदअ़त है।

—शामी रशीदिया, भाग 2, पृ० 124

अ़क़ीदों का सही होना

दसवीं मुहर्रम की फ़ज़ीलत और अहमियत और उसकी वजह सहीह हदीसों की रोशनी में मालूम हुई, वह है मूसा عليه السلام और बनी इसराईल का फ़िरऔ़न और उसकी फ़ौज से निजात पाना। इसी वजह से मूसा عليه السلام ने रोज़ा रखा और उन्हीं की पैरवी में आंहज़रत ﷺ ने भी रोज़ा रखा और उम्मत को भी हुक्म दिया। वाजिब होना ख़त्म हो गया और मुस्तहब होना बाक़ी है, शायद बीवी-बच्चों पर खाने-पीने की वुसअ़त की वजह भी यही वाक़िया होगा। वल्लाहु आलम०

एक बड़ी ग़लतफ़हमी

बहुत से लोग प्रोपगंडे की वजह से ऐसा समझते हैं कि मुहर्रम और आ़शूरा

की यह अहमियत और फ़ज़ीलत हज़रत सैयदना हुसैन رضي الله عنه की शहादत से मुताल्लिक़ है, यह बिल्कुल ग़लत है। शरीअ़त जनाबे रसूलुल्लाह ﷺ के ज़माने में मुकम्मल हो गई थी। सैयदना हुसैन رضي الله عنه का वाक़िया तो बहुत बाद में पेश आया, ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन का दौर ख़त्म हो चुका, इसके भी कई साल बाद। भला इससे शरीअ़त के किसी मसअले का ताल्लुक़ क्या हो सकता है?

सैयदना हुसैन رضي الله عنه की शहादत का वाक़िया बेशक बहुत दर्दनाक और तक्लीफ़ देने वाला वाक़िया है, लेकिन इस्लाम में मातम करना जायज़ नहीं, इस्लाम मातम का दीन नहीं है। इस्लामी तारीख़ का हर-हर वरक़ शहीदों के ख़ून से रंगीन है। अगर मातम किए जाएं तो हर दिन मातम ही करना होगा। हज़रत उमर رضي الله عنه की शहादत, हज़रत उस्मान ग़नी رضي الله عنه की शहादत, हज़रत अली رضي الله عنه की शहादत, बल्कि इससे पहले सैयदुश्शुहदा हज़रत हमज़ा رضي الله عنه की शहादत, मौता की लड़ाई के शहीदों का वाक़िया, बेरे मऊना का वाक़िया, रजीअ की लड़ाई का वाक़िया— ये वाक़िए जो हुज़ूर ﷺ के लिए भी दर्द व ग़म की वजह बने थे, उनको क्यों भूल जाएं— लेकिन इस्लाम मातम करने की तालीम नहीं देता, बल्कि दीन के लिए जान व माल क़ुर्बान करने की तालीम देता है। इन हमारे बुज़ुर्गों ने दीने हक़ के लिए जानें दीं, हम दीन के लिए क्या क़ुर्बानी पेश कर रहे हैं, यह सोचने की बात है।

शेख़ अब्दुल हक़ देहलवी रह०'मा सब-त बिस्सुन्ना' में लिखते हैं कि शेख़ इबने हजर हैसमी मिस्री रह०, जो मक्का मुकर्रमा के मुफ़्ती और अपने वक़्त के शेख़ुल फ़ुक़हा और शेख़ुल-मुहद्दिसीन थे, अपनी किताब 'सवाइक़े मुहर्रिक़ा' में लिखते हैं—

'जान लो कि हुसैन رضي الله عنه को आ़शूरा के दिन जिस मुसीबत का सामना करना पड़ा, वह सिर्फ़ शहादत थी, जिससे मालूम हुआ कि अल्लाह तआ़ला ने उनका दर्जा और मर्तबा बुलन्द फ़रमाया और अहले बैत ताहिरीन के दर्जों से मिला दिया तो अगर कोई उस दिन इस मुसीबत को याद करे तो 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन' पढ़ ले, ताकि हुक्म की फ़रमांबरदारी हो जाए और वायदा किया गया सवाब हासिल हो जाए। अल्लाह तआ़ला ने इन्नालिल्लाहि पढ़ने वालों के लिए फरमाया है, ऐसे लोगों पर अल्लाह तआ़ला की ओर से सलवात व रहमत है और यही लोग हिदायत पाए हुए हैं। उस दिन बड़ी बड़ी ताअ़तों जैसे रोज़ा वग़ैरह के सिवा किसी और काम में मश़ग़ूल

न हों और हरगिज़ राफ़ज़ियों की और शीओं की बिदअ़तों में मश्गूल न हों, जैसे नौहा, मातम और रोना-धोना— यह मुसलमानों का तरीक़ा नहीं, वरना आंहज़रत ﷺ की वफ़ात का दिन इसका हक़दार था, इसी तरह नवासिब, जो अहले बैत के दुश्मन हैं, उनका भी तरीक़ा अख़्तियार न करो, ये जाहिल हैं। फ़ासिद से फ़ासिद का और बिदअ़त से बिदअ़त का मुक़ाबला करते हैं, बुराई के मुक़ाबले में बुराई करते हैं, उस दिन ख़ुशी और मसर्रत ज़ाहिर करते हैं, उसको ईद बनाते हैं, ज़ीनत ज़ाहिर करते हैं, ख़िज़ाब लगाते हैं, सुरमा लगाते हैं, नए कपड़े पहनते हैं, ख़र्च में फ़राख़ी करते हैं, ऐसे खाने पकाते हैं जो आ़दत के ख़िलाफ़ हैं और समझते हैं कि ये सब मस्नून और मोताद हैं, हालांकि सुन्नत इन सबका छोड़ना है, इसलिए कि इस में कोई एतमाद के क़ाबिल असर व रिवायत रिवायत नहीं की गई है।

फ़िक़्ह व हदीस के कुछ इमामों से पूछा गया कि उस दिन सुरमा लगाना, गुस्ल करना, मेंहदी लगाना, दाने पकाना, नए कपड़े पहनना और ख़ुशी ज़ाहिर करना कैसा है? तो फ़रमाया, इसमें न आंहज़रत ﷺ से कोई सही बात रिवायत की गई है, न किसी सहाबी से, चारों इमाम और उनके अलावा किसी ने भी इन चीज़ों को मुस्तहब नहीं समझा। भरोसे की किताबों में न कोई सही बात रिवायत की गई है, न ज़ईफ़ (कमज़ोर), जो कहा जाता है कि आ़शूरा के दिन जो सुरमा लगाए, उसकी आंखे साल भर न दुखेंगी, जो गुस्ल करे वह साल भर बीमार न होगा, जो अहल व अ़याल पर वुसअ़त करे, अल्लाह तआ़ला उस पर पूरे साल वुसअ़त करेंगे, इसी तरह के और फ़ज़ाइल जैसे, एक ख़ास नमाज़ और यह कि उसमें आदम عليه السلام की तौबा क़ुबूल हुई, नूह عليه السلام की कश्ती जूदी पहाड़ पर ठहरी, इब्राहीम عليه السلام को आग से निजात मिली, इसमाईल عليه السلام को मेंढे के ज़रिए बचा लिया गया, यूसुफ़ عليه السلام, याक़ूब عليه السلام को वापस मिले, ये सब बातें गढ़ी हुई हैं। सिर्फ़ तवस्सोअ़ अलल अ़याल की हदीस है, जब कि उसकी सनद में कुछ कलाम है, तो ये जाहिल लोग अपनी जिहालत की वजह से उस दिन को ईद बनाते हैं और ये राफ़ज़ी उसको मातम और ग़म का दिन मानते हैं। ये दोनों सुन्नत के ख़िलाफ़ हैं, और ऐसे ही ये बातें कुछ हाफ़िज़ों ने ज़िक्र की हैं। —मा सब-त बिस्सुन्ना, पृ० 16

तवस्सोअ़ अलल अ़याल की हदीस की तफ़्सील गुज़र चुकी कि वह एतबार के क़ाबिल है, बाक़ी सब बातें एतबार के क़ाबिल नहीं हैं। अ़ल्लामा

इब्ने क़य्यिम रह० ने भी साफ़ कर दिया है कि आ़शूरा के दिन सुरमा लगाना, तेल लगाना, ख़ुश्बू लगाना, इस मज़्मून की हदीस झूठे लोगों की गढ़ी हुई हैं।

—मा सब-त बिस्सुन्ना, पृ०17

शाह अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रह० ने शेख़ अली मुहम्मद बिन इराक़ की 'तंज़ीहुश-श-रीअ़ः अल- मरफ़ूआ़ अनिल अहादीसिल मौज़ूअ़ः' से एक मौज़ू हदीस नक़ल की है जिसमें यह मज़्मून है जो आ़शूरा के दिन रोज़ा रखे, उसको साठ साल के रोज़े और क़ियाम का सवाब मिलेगा और जो उस दिन रोज़ा रखे, उसको दस हज़ार फ़रिश्तों का सवाब मिलेगा और जो यह रोज़ा रखे उसको हज़ार हाजियों और उमरा करने वालों का सवाब मिलेगा, उसको दस हज़ार शहीदों का सवाब मिलेगा, उसको सात आसमानों का सवाब मिलेगा, और जो कोई उस दिन किसी भूखे को खिलाए तो गोया उसने उम्मते मुहम्मदिया के सारे फ़क़ीरों को पेट भर कर खिलाया और जिसने किसी यतीम के सिर पर उस दिन हाथ फेरा उसके लिए हर बाल के बदले में जन्नत में एक दर्जा बुलन्द होगा। उसी दिन अल्लाह तआ़ला ने इन मख़्लूक़ात को पैदा किया, आसमान ज़मीन, क़लम, लौह, जिब्रील عليه السلام, फ़रिश्ते, आदम عليه السلام, उसी दिन इब्राहीम عليه السلام पैदा हुए, उसी दिन उनको आग से निजात मिली, इसमाईल عليه السلام का फ़िदया आया, फिरऔ़न ग़र्क़ हुआ, इदरीस عليه السلام को आसमान पर उठाया गया, आदम عليه السلام की तौबा क़ुबुल हुई, दाऊद عليه السلام की मग़्फ़िरत हुई अल्लाह तआ़ला अर्श पर मुस्तवी हुए, क़ियामत उसी दिन आएगी।

यह हदीस मौज़ू (गढ़ी हुई) है। इब्नुल जौजी ने इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से मौज़ूआत में ज़िक्र किया है। उसकी आफ़त हुबैब बिन अबी हुबैब है।

—मा सब-त बिस्सुन्ना, पृ० 20

इसके बाद शाह साहब ने एक और मौज़ू हदीस ज़िक्र की, जिसमें ये बातें भी हैं। उसी दिन यूसुफ़ عليه السلام क़ैदख़ाने से निकले, उसी दिन याक़ूब عليه السلام को आंखों की रौशनी वापस मिली, उसी दिन अय्यूब عليه السلام की बला टली। उसी दिन यूनुस عليه السلام मछली के पेट से निकले। उसी दिन मुहम्मद ﷺ के अगले-पिछले गुनाह माफ़ हुए, उसी दिन कौमे यूनुस عليه السلام की दुआ क़बुल हुई। जो उस दिन रोज़ा रखे, उसके लिए चालीस साल का कफ़्फ़ारा होगा। सबसे पहली मख़्लूक़ दुनिया की आ़शूरा का दिन है। सबसे पहली बारिश उसी दिन हुई जो उस दिन रोज़ा रखे गोया उसने हमेशा रोज़ा रखा, यह नबियों का रोज़ा

है। जिसने इस रात को ज़िंदा किया गोया सातों आसमान वालों के बराबर इबादत की, जिसने चार रकअत इस तरह पढ़ी कि हर रकअत में एक बार सूरा फ़ातिहा और पचास बार कुल हुवल्लाहु अहद, तो उसके पचास साल आगे के और पचास साल पीछे के गुनाह माफ़ हो जाएंगे और अल्लाह तआ़ला उसके लिए मला-ए-आ़ला में नूर के हज़ार मिंबर बना देंगे और जिसने एक घूंट पानी पिला दिया, गोया एक लम्हा नाफ़रमानी नहीं की, जिसने उस दिन किसी मिस्कीन घराने वालों को पेट भर खिलाया, वह पुल सिरात पर बिजली की तरह गुज़र जाएगा और जिसने कोई सदक़ा किया, गोया किसी मांगने वाले को भी वापस नहीं किया और जिसने किसी यतीम के सर पर हाथ फेरा, गोया औलादे आदम के सारे यतीमों के साथ भलाई की, जिसने किसी मरीज़ की पूछ-ताछ की, उसने औलादे आदम के तमाम बीमारों की अयादत की।

इब्ने जौज़ी ने इसको मौज़ूओं में ज़िक्र किया और फ़रमाया कि इसके रिवायत करने वाले सिक़ा (विश्वसनीय) हैं। ज़ाहिरिया के बाद के कुछ लोगों ने इसको गढ़ कर उसके लिए यह सनद जोड़ दी। —मा सब-त बिस्सुन्ना

क्या क़ियामत आ़शूरा के दिन आएगी?

क़ियामत जुमा के दिन आएगी, यह बात सही हदीस में आई है। (तिर्मिज़ी, पृ० 110) लेकिन क्या वह जुमा दसवीं मुहर्रम को होगा? यह बात एतबार के लायक़ हदीस में नहीं मिली। हज़रत शाह रफ़ीउद्दीन रह० ने ज़लज़लतुस्साअ़ः में इसको ज़िक्र किया है। वहीं से शायद यह बात मशहूर हुई, मुफ़्ती किफ़ायतुल्लाह साहब ने तालीमुल इस्लाम में भी इसका ज़िक्र किया है और किताबों में भी। अल्लामा अनवर शाह कश्मीरी रह० की तक़रीर तिर्मिज़ी में भी ज़िक्र की गई है कि मज़बूत सनद से यह बात साबित है। मौलाना युसुफ़ बिन्नौरी रह० ने लिखा है कि मुझे ऐसी कोई हदीस नहीं मिली।

—मआ़रिफ़ुस्सुनन, भाग 4, पृ० 306

मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी उस्मानी मद्द ज़िल्लहू ने लिखा कि इसकी हदीस मौज़ूअ़ है। —तंज़ीहुश शरीआ़ अल मरफ़ूआ़, भाग 2, पृ 149

और 'अल-आली अल-मस्नूआ़ लिस्सुयूती' में भी एक हदीस के ज़िम्न में यह मज़्मून आया है। उसकी आफ़त हबीब बिन अबी हबीब है। इसका मतलब यह होता है कि उसी ने यह हदीस गढ़ी है। —अल-आली अल-मस्नूआ़,

भाग 2, पृ० 108, तंबीहुल ग़ाफ़िलीन पृ० 259 में भी यह हदीस आई है। मुहश्शी रह० ने लिखा है कि मौज़ूअ है और उसी रिवायत करने वाले का नाम लिखा है।

कलाम का खुलासा यह है कि ख़ास आ़शूरा के दिन क़ियामत का आना किसी मोतबर हदीस से मालूम नहीं हो सका, बल्कि हदीस में आया है कि हर जुमा के दिन इंसान व जिन्न के सिवा बाक़ी हैवानात क़ियामत के इंतिज़ार में रहते हैं। जब सूरज निकल आता है तो उनको इत्मीनान होता है।—मिश्कात, पृ० 120

शायद इसी लिए आंहज़रत ﷺ हर जुमा की फ़ज्र में 'अलिफ़ लाम-मीम तंज़ीलुस्सज्दा और सूरः दह्र पढ़ते थे कि इन सूरतों में आदम की पैदाइश का भी ज़िक्र है और क़ियामत का भी, ताकि लोग क़ियामत की तैयारी करें। वल्लाहु आलम बिस्सवाब

इस सारी बहस से मालूम हुआ कि आ़शूरा की फ़ज़ीलत और अहमियत में सिर्फ़ मूसा ؑ और बनी इसराईल की निजात और फ़िरऔ़न और उसकी फ़ौज के डूबने के वाक़िए को दख़ल है। इसी वजह से इस दिन की फ़ज़ीलत है और इसी वजह से रोज़ा भी है।

और किसी वाक़िए का कोई सबूत नहीं है। सैयदना हुसैन ؓ की शहादत के वाक़िए से भी उस दिन में कोई शरई हुक्म साबित नहीं होता। किसी ख़ास खाने या नमाज़ का भी कोई सबूत नहीं है।

तफ़्सीर इब्ने कसीर में मुस्नद अहमद से एक हदीस हज़रत अबू हुरैरह ؓ की ज़िक्र की गई है, जिसमें नूह ؑ की नाव का जूदी पहाड़ पर ठहरने का ज़िक्र है। इब्ने कसीर ने इसको ग़रीब कहा। उनके ग़रीब कहने का मतलब बहुत-सी जगहों पर यही होता है कि उसका एतबार नहीं।

इसलिए सही हदीसों में जो बात आई है, सिर्फ़ उसी को काफ़ी समझना चाहिए। अल्लाह तआ़ला उम्मत को किताब व सुन्नत पर क़ायम फ़रमाए और बिदअ़तों, खुराफ़ातों और बे-बुनियाद बातों को शरीअ़त में दाख़िल करने से बचाए। आमीन या रब्बल आलमीन व सल्लल्लाहु अला सैयदिना मुहम्मदिंव-व आलिही व सह्बिही व उम्मतिही अजमईन वलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन।

—फ़ज़्लुर्रहमान आज़मी,
10 शाबान 1421 हि०, 7 नवम्बर 2000 ई०

मुहर्रम का महीना इस्लामी साल के मुबारक महीनों में शुमार होता है और उसी से इस्लामी साल (इस्लामी कैलेन्डर) की शुरुआत होती है। क़ुरआन मजीद में साल के बारह महीनों में जिन चार महीनों को **''अशहरु हुरुम''** (क़ाबिले एहतिराम) महीने कहा गया है मुहर्रम उनमें भी शामिल है, इसके नफ़्ल रोज़ों की भी बड़ी फ़ज़ीलत है, ख़ास कर इसकी दस तारीख़ का रोज़ा बहुत ही अहम होता है।

इस्लाम से पहले क़दीम ज़माने से ही मुहर्रम की दस तारीख़ की बहुत अहमियत रही है। रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ होने से पहले मुहर्रम की दसवीं तारीख़ का रोज़ा इस्लाम में भी फ़र्ज़ था, रमज़ान के रोज़े फ़र्ज होने के बाद इस रोज़े की फ़र्ज़ीयत ख़त्म कर दी गई, लेकिन इसका सवाब बाक़ी है।

आशूरा के दिन अपने घर वालों और अहले तअल्लुक़ के ऊपर ख़र्च करना उन्हे खिलाना पिलाना भी ख़ैर व बरकत का काम है। इस किताब में मुहर्रम के महीने और ख़ास तौर पर आशूरा के बारे में बहुत सी ज़रुरी और फ़ायदेमन्द बातें बताई गई हैं।